महबूब नगर-आ.प्र.। श्री वेंकटसाई मेडिकल कॉलेज में हेल्थ एग्ज़िबिशन का उद्घाटन करने के पश्चात् आन्ध्र पदेश के राज्यपाल एस.एल.वी.नरसिम्हा का स्वागत करते हुए ब्र.कु.महादेवी।

गुराया-पंजाब। नशा मुक्ति तथा विश्व नव निर्माण प्रदर्शनी का दीप प्रज्वलन द्वारा शुभारंभ करते हुए समाज सुधारक सुखबीर सिंह छात्रोवाल, स्टेट बैंक ऑफ पटियाला के मैनेजर, ब्र.कु.सीमा, ब्र.कु.ललिता तथा अन्य।

फिरोजपुर कैंट-पंजाब। टेलीकॉम के जेनरल मैनेजर अरुण कुमार को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.उषा। साथ हैं ब्र.कु.शक्ति।

डिबरुगढ़-असाम। शान्तिदूत युवा साइकिल यात्रा के स्वागत समारोह के पश्चात् समूह चित्र में ब्रह्मपुत्र केकर एण्ड पालीमर लिमिटेड के उप महाप्रबन्धक पी.के.माटी, श्रीमति माटी, ब्र.कु.निवनीता, ब्र.कु.रेनू, साइकिल यात्री तथा अन्य।

दिल्ली-जैतपुर। सेवाकेन्द्र के सिलवर ज्युबली महोत्सव पर केक काटने के पश्चात् उपस्थित हैं ब्र.कु.उषा, ब्र.कु.सुन्दरी, ब्र.कु.लक्ष्मण तथा अन्य भाई-बहनें।

डिबाई। सात दिवसीय बारह ज्योतिर्लिंगम दर्शन मेले का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.पुष्पा, आई.ए.एस सीताराम मीना, ब्र.कु.भारत भूषण, ब्र.कु.कुसुम तथा अन्य।

कर्म के प्रकार व उनका फल

गीता ज्ञान का आध्यात्मिक रहस्य

राजयोग शिक्षिका ब्र.कु.उषा

भगवान ने साथ-साथ तीन प्रकार के कर्म बताए हैं। जिसमें सतोप्रधान कर्म कौन से हैं.? जो यज्ञ कर्म हैं, आत्म शुद्धिकरण अर्थ कर्म और आसक्ति, राग, द्वेष से रहित कर्मफल की चाह के बिना किया जाता है, वह सात्विक कर्म है। राजसिक कर्म कौन से हैं ? जो कर्म अपनी इच्छा पूर्ति के लिए परिश्रम युक्त जहाँ मेहनत भी करता है इंसान और अहंकार युक्त है, उस अहंकार में आकर किसी को दु:ख भी दे देता है। वह रजोगुणी कर्म है। जिस कर्म का परिणाम हानि हो और अपने सामर्थ्य को देखे बिना, विचारे बिना, मोह अज्ञान वश किया गया कर्म, वह तामसिक कर्म है? कई बार कई लोग परिणाम को सोचते नहीं हैं और कर लेते हैं । बिना विचारे, उसके परिणाम को सोचते भी नहीं है और फिर दु:खी होते हैं। तो ये कर्म तामसिक कर्म माना गया है। इस प्रकार से ये तीन कर्म का भेद बताया है।

फिर कर्ता के तीन प्रकार के भेद का वर्णन किया गया है। जो व्यक्ति संग-दोष से मुक्त, अहंकार रहित, दृढ़ संकल्पधारी और उत्साह पूर्वक अपना कर्म करता है और सफलता असफलता में अविचलित रहता है , वह सात्विक कर्ता है। कर्तापन का जो भाव है उसमें व्यक्ति अहंकार से मुक्त, संगदोष से मुक्त और जो करता है दृढ़ संकल्प के आधार से करता है। क्योंकि दृढ़ता में ही सफलता है। उसे करने में भी उसको उत्साह आता है। वह सात्विक कर्ता है।

जो व्यक्ति कर्म और कर्मफल के प्रति आसक्त होकर फलों का भोग करना चाहता है। सदैव ईर्ष्यालु वा लोभी है, अपवित्र और सुख-दु:ख से विचलित होता रहता है वह राजसिक कर्ता है।

तीसरा प्रकार, जो कर्ता ज्ञान के विरूद्ध कार्य करता है, अर्थात् समझ के विरूद्ध कार्य करता है। चंचल चित्त वृत्ति वाला है, असभ्य, घमण्डी, रूद्र, दूसरे के कार्य में बाधा पहुंचाने वाला, सदैव खिन्न, आलसी, दीर्घ सूत्री है, वह फिर कर लेंगे, बाद में कर लेंगे, देखा जायेगा ये कर्ता तामस कर्ता है।

ये जो तीन प्रकार के भेद, चाहे ज्ञान के भेद, चाहे कर्म के भेद, चाहे कर्ता के भेद या त्याग के भेद, ये सब बताते हैं कि हमारी जीवन शैली, किस शैली में जा रही है? ये जैसे एक प्रकार का सम्पूर्ण आईना भगवान ने हमारे सामने रखा है। जहाँ हम अपने आप को देखें कि हम कौन सी श्रेणी में चले जाते हैं। हम अपने आप में परिवर्तन करना चाहें तो ये परिवर्तन भी संभव है। आईना जब सामने है, तो परिवर्तन करना आसान हो जाता है। इस प्रकार से कर्ता की बुद्धि भी तीन प्रकार की है। वो तीन प्रकार की बुद्धि कौन सी है? जो बुद्धि प्रवृत्ति और निवृत्ति, कर्तव्य और अकर्तव्य, भय और अभय तथा बंधन और मुक्ति को यथार्थ समझती है, वह बुद्धि सात्विक बुद्धि है। उसी के साथ जो बुद्धि, धर्म और अधर्म, कर्तव्य-अकर्तव्य, के भेदों को यथावत नहीं जानती है, वह राजसी बुद्धि हैं। दुविधा की हालत में फंसे रहते हैं। ये करें, ये करें ऐसा करें वैसा करें, ऐसा नहीं करें वो राजसी बुद्धि है। तामसी बुद्धि अज्ञान अंधकार के वशीभूत होकर, अधर्म को धर्म मान लेता है। धर्म को अधर्म मानता है और सदैव विपरीत दिशा में प्रयत्नशील रहता है, वह है तामसी बुद्धि। तो इस प्रकार तीन प्रकार की बुद्धि मनुष्य के अंदर स्पष्ट की गई है। कैसी प्रकृति से, कैसी बुद्धि, उसकी बनती है। तीन प्रकार की धारणाओं की शक्ति बतलायी है।

जो योगाभ्यास द्वारा अव्यभिचारी धारणा से अपने मन, प्राण और इंद्रियों के कार्य कलापों को वश में रखते हैं, वह सात्विक धारणा है। जहाँ सम्पूर्ण अपनी इंद्रियों के ऊपर अनुशासन है, वह सात्विक धारणा है। जिस वृत्ति से मनुष्य धर्म, अर्थ तथा काम के फलों में लिप्त बना रहता है, वह राजसी धारणायें हैं। दुर्बुद्धि पुरुष जिस धारणा के द्वारा स्वप्न, भय, शोक, विषाद और मद को नहीं त्यागता है वह धारणा तामसी है। तो इस प्रकार तीन प्रकार की धारणा शक्ति वाले लोग भी इस संसार में हैं। सबसे श्रेष्ठ धारणा कि शक्ति है। जिसका अपनी इंद्रियों के ऊपर संपूर्ण अधिकार है, और योगाभ्यास द्वारा उस अधिकार को प्राप्त किये हुए हैं। इस प्रकार फिर अर्जुन को तीन प्रकार के सुखों की व्याख्या की है।

हे अर्जुन, तीन प्रकार के सुख का वर्णन सुन। अर्थात् सबसे पहले त्याग और सन्यास की बात बताई, उसके बाद ज्ञान तीन प्रकार का, कर्म तीन प्रकार का, कर्ता तीन प्रकार के, साथ ही साथ बुद्धि तीन प्रकार की, धारणा शक्ति तीन प्रकार की और उसके फलस्वरूप तीन प्रकार के सुख का वर्णन सुनने के लिए भगवान कहते हैं। जिसमें रमण करने से मनुष्य प्रसन्न रहता है और जिससे दु:ख का अंत होता है। क्रमश:

मैं आश्वस्त हूं

पेज 5 का शेष..

अवसर मिला तथा और भी जानकारियां प्राप्त करने को मिली। इसके बाद मैंने रोज़ाना मुरली क्लास करना शुरु किया और यहां के साहित्य पढ़ने लगा। अब मुझे ऐसा एहसास होता है कि जो वेदों के अंदर वास्तविक ज्ञान है, जो सत्य विद्या है, उसका प्रचार वास्तव में ये ब्रह्माकुमारी संस्था ही कर रही है। इसमें कोई ढ़ोंग-ढ़कोसला नहीं है और मुझे लगता है कि जो मुरली का ज्ञान है वो सीधा ईश्वर के कण्ठ से निकला हुआ ज्ञान है, मुझे विश्वास हो चुका है कि ये परमात्मा के ही महावाक्य हैं। मेरी रोज़ की समस्याओं का समाधान तथा प्रश्नों का उत्तर रोज़ की मुरलियों में मिल जाता है, तो धीरे-धीरे मेरा अटूट विश्वास बंध चुका है।

मैं इस यज्ञ के संस्थापक दादा लेखराज तथा परमपिता परमात्मा को हृदय से अपने माता-पिता के रूप में स्वीकार कर चुका हूं और ऐसे माता-पिता के संग में ही हमारा जीवन सार्थक हो सकता है। यहां के कार्यक्रम इतनी सुंदरता और पारदर्शिता के साथ सम्पन्न होते हैं कि मुझे आश्चर्य होता है कि ये कैसे संभव होता है। यहां सभी मत-मतांतरों को पूरी छूट के साथ अपने विचार प्रकट करने का मौका दिया जाता है, किसी भी प्रकार का कोई प्रतिबंध नहीं होता है।

भारत के प्राचीन धर्म दर्शन की इससे पवित्र कोई संस्था नहीं है। वेदों में कहा गया है कि पृथ्वी पर सबसे पहले देवनागरी भाषा थी, इसका मतलब तो ये हुआ कि हमारा असली धर्म भी सनातन देवी-देवता धर्म ही है, लेकिन आज ये खोया हुआ है। इसके नाम और धर्म को उजागर ये ब्रह्माकुमारीज़ संस्था ही कर रही है। ये संस्था चारो दिशाओं में पतित व दैत्य रूपी मनुष्यों को मनुष्य, मनुष्यों को देवता बनाने तथा अहिंसा के बल से हिंसा को समाप्त करने का कार्य कर रही है। इस संस्था के सिद्धान्त बहुत ही उच्च कोटि के हैं। तो आज के मानव को इसे समझना चाहिए और मैं समस्त विश्व की सरकारों से अपील करना चाहता हूं कि इस संस्था को सभी सरकारें पूरा-पूरा सहयोग और हर प्रकार की सहायता प्रदान करें।

अब मुझे जब परमात्मा से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है तो मुझे बहुत ही खुशी हुई और पूरा विश्वास हुआ कि मैं भगवान से मिल रहा हूं, क्योंकि मैं इसी उद्देश्य को लेकर यहां आया था कि मैं जान सकूं कि क्या सचमुच परमात्मा का अवतरण इस धरा पर हो चुका है और क्या गीता में किये अपने वायदे, यदा यदा ही धर्मस्य....के अनुसार वो आ सकता है इस धरा पर। अब मैं पूरा आश्वस्त हो चुका हूं कि वास्तव में परमात्मा से मेरा मिलन हुआ है। अभी ये जो पृथ्वी पर विनाशकारी प्रक्रियायें चल रही हैं, वो तेजी से बढ़ेंगी और ये युग लगभग अपने परिवर्तन के निकट है। आज, अभी और कल, कभी भी इसका परिवर्तन हो सकता है। इस परिवर्तन के बाद इस पृथ्वी पर केवल ज्ञान और सत्य का प्रचार-प्रसार होगा और तब से ये धरा सतयुग कहलाने लग जाएगी और तब केवल देवताएं ही इस पृथ्वी पर होंगे, ऐसा मेरा अटल विश्वास है। अब मैं एक सदस्य और सहयोगी के रूप में इस संस्था के साथ हूं और मैं मानता हूं कि वास्तव में ये संस्था ईश्वर की संस्था है। और जितनी भी धार्मिक संस्थायें या मत-मतांतर हैं वे सभी मानव कृत हैं, परन्तु ये संस्था वास्तव में ईश्वर द्वारा स्थापित संस्था है।